



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE



**साहित्यकार मृत्युंजय कुमार सिंह से हुआ संवाद कार्यक्रम
जनसंचार विभाग का आयोजन**

वर्धा, 03 फरवरी 2025: भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी, गीतकार, उपन्यासकार, स्तंभकार और लोक गायक मृत्युंजय कुमार सिंह के साथ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में शनिवार 01 फरवरी को जनसंचार विभाग की ओर से महादेवी वर्मा सभागार में संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी कुलपति प्रो. कृपाशंकर चौबे ने की। मृत्युंजय कुमार से प्रदर्शनकारी कला विभाग के अध्यक्ष डॉ. ओमप्रकाश भारती, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. राकेश मिश्रा व हिंदी साहित्य विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. सुनील कुमार ने उनके समस्त रचना संसार को लेकर उनसे संवादकिया। डॉ. सुनील कुमार ने मृत्युंजय कुमार सिंह लिखित खंडकाव्य 'द्रौपदी' को लेकर पूछे गए सवाल पर मृत्युंजय कुमार ने कहा कि द्रौपदी

भाग का आयोजन

या कुमार सिंह से संवाद

हृन 10.30
पुलसी भवन



लिखते समय मन में कई प्रश्न थे। इसे लिखते समय लेखिका प्रतिभा राय, इरावती कर्वे आदि की रचनाओं का संदर्भ लिया गया और परकाया प्रवेश कर अनेक प्रश्नों का उत्तर खोजा गया।

डॉ. राकेश मिश्रा द्वारा उनकी रचना 'गंगा रत्न विदेशी' को लेकर पूछे गए प्रश्न पर उन्होंने कहा कि यह उपन्यास पीढ़ियों के इतिहास को समेटता है। उपन्यास की तैयारी सन 2004 में प्रारंभ की थी। इस उपन्यास में गयाना, मॉरीशस, गिरमिटिया मजदूर आदि का वर्णन किया गया है। डॉ. ओमप्रकाश भारती ने उनकी सृजन यात्रा पर पूछे गए सवाल पर उन्होंने कहा कि कुछ बनने का लक्ष्य नहीं था। गीत तो मैं बचपन से गाया करता था। इंडोनेशिया में बिताए गए दिनों पर उन्होंने कहा कि इंडोनेशिया में महाभारत की परंपरा समृद्ध है। वहां कीचक रामायण प्रसिद्ध है। वहां के लोग महाभारत को अपना इतिहास मानते हैं। इस दौरान डॉ. मनोज राय, डॉ. जयंत उपाध्याय, डॉ. रूपेश कुमार सिंह, डॉ. संदीप सपकाले तथा शोधार्थियों द्वारा पूछे प्रश्नों का मृत्युंजय कुमार सिंह ने लंबे अनुभव से अपने अंदाज में समाधान किया। उनके द्वारा प्रस्तुत गीतों से सभागार मंत्रमुग्ध हुआ। मृत्युंजय कुमार सिंह ने अपने रचना संसार और एक पुलिस अधिकारी के रूप में आए व्यापक जीवन अनुभव को विस्तार से साझा किया।

मृत्युंजय कुमार सिंह का स्वागत प्रो. कृपाशंकर चौबे द्वारा सूत माला अंगवस्त्र और विश्वविद्यालय का प्रतीक चिन्ह देकर किया गया। मराठी विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. संदीप सपकाले ने स्वागत भाषण किया। कार्यक्रम का संचालन जनसंचार विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. राजेश लेहकपुरे ने किया तथा हिंदी साहित्य विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. रूपेश कुमार सिंह ने आभार माना।



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय PUBLIC RELATIONS OFFICE



कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्वलन एवं कुलगीत की प्रस्तुति से तथा समापन राष्ट्रगान से किया गया। इस अवसर पर अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

साहित्यिक मृत्युंजय कुमार सिंह यांच्याशी संवाद कार्यक्रम

जनसंचार विभागाचे आयोजन

वर्धा, ०३ फेब्रुवारी २०२५: भारतीय पोलिस सेवेचे अधिकारी, गीतकार, काढंबरीकार, स्तंभलेखक आणि लोकगायक मृत्युंजय कुमार सिंह यांच्याशी महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विद्यापीठात शनिवार ०१ फेब्रुवारी रोजी जनसंचार विभागातर्फे महादेवी वर्मा सभागृहात संवाद कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी प्रभारी कुलगुरु प्रो. कृपाशंकर चौबे होते. प्रदर्शनकारी कला विभागाचे अध्यक्ष डॉ. ओमप्रकाश भारती, गांधी व शांती अध्ययन विभागाचे अध्यक्ष डॉ. राकेश मिश्रा आणि हिंदी साहित्य विभागाचे सहायक प्रोफेसर डॉ. सुनील कुमार यांनी त्यांच्या साहित्यावर चर्चा केली. डॉ. सुनील कुमार यांनी मृत्युंजय कुमार सिंह यांनी लिहिलेल्या 'द्रौपदी' या महाकाव्याबद्दल विचारले असता मृत्युंजय कुमार म्हणाले की द्रौपदी लिहिताना त्यांच्या मनात अनेक प्रश्न होते. हे लिहिताना प्रतिभा राय, इरावती कर्वे इत्यादी लेखिकांच्या कृतींमधून संदर्भ घेतले गेले.

डॉ. राकेश मिश्रा यांनी त्यांच्या 'गंगा रतन विदेशी' या रचनेविषयी विचारले असता ते म्हणाले की या काढंबरीत पिद्यांचा इतिहास समाविष्ट आहे. काढंबरीची तयारी २००४ मध्ये सुरु झाली. या काढंबरीत गयाना, मॉरिशस, कराबद्द कामगार इत्यादींचे वर्णन केले आहे. डॉ. ओमप्रकाश भारती यांनी त्यांच्या सर्जनशील प्रवासाबद्दल विचारले असता ते म्हणाले की त्यांचे काहीही बनण्याचे ध्येय नव्हते. लहानपणापासून मी गाणी म्हणायचो. इंडोनेशियातील त्यांच्या दिवसांबद्दल बोलताना त्यांनी सांगितले की इंडोनेशियामध्ये महाभारताची परंपरा समृद्ध आहे. तिथे कीचक रामायण प्रसिद्ध आहे. तिथले लोक महाभारत हा त्यांचा इतिहास मानतात. या वेळी डॉ. मनोज राय, डॉ. जयंत उपाध्याय, डॉ. रूपेश कुमार सिंह, डॉ. संदीप सपकाळे आणि विद्यार्थ्यांनी मृत्युंजय कुमार सिंह यांना प्रश्न विचारले. त्यांनी सादर केलेल्या गाण्यांनी प्रेक्षक मंत्रमुग्ध झाले.

मृत्युंजय कुमार सिंह यांचे स्वागत प्रो. कृपाशंकर चौबे यांनी सूतमाळ, शाल आणि विश्वविद्यालयाचे प्रतीक चिह्न देऊन केले. मराठी विभागाचे सहायक प्रोफेसर डॉ. संदीप सपकाळे यांनी स्वागत भाषण केले. कार्यक्रमाचे संचालन जनसंचार विभागाचे असोशिएट प्रोफेसर डॉ. राजेश लेहकपुरे यांनी केले तर हिंदी साहित्य विभागाचे सहायक प्रोफेसर डॉ. रूपेश कुमार सिंह यांनी आभार मानले.

कार्यक्रमाची सुरुवात दीपप्रज्ज्वलन आणि कुलगीताने झाली तर शेवट राष्ट्रगीताने झाला. यावेळी शिक्षक, शोधार्थी आणि विद्यार्थी मोट्या संख्येने उपस्थित होते.

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: buddhadassmirge@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष :+91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305